JEEVAK AYURVED MEDICAL COLLEGE
& HOSPITAL RESEARCH CENTER

TOPIC

CONCEPT OF VEERYA OF A DRAVYA WITH ITS SCIENTIFIC IMPORTANCE.

PRESENTED BY

MOHD.SAIF KHAN

SHYAMU KUMAR CHAUHAN

GUIDED BY

DR.PRADEEP JAIN

DR.JIGYASA

निरुक्ति (Etymology)

" वीर विक्रान्तों " |

The term virya is derived from the root "Vir", in Vikrant (Potent or powerful).

. " वीरयते विक्रान्तः कर्मसमर्थो भवति अनेन इति वीर्यम् " |

. अर्थात् द्रव्य जिसके द्वारा कर्मसम्पादन मे समर्थ हो उसे वीर्य कहते है |

- **The Factor capable of producing drug action or responsible for producing drug action.**

लक्षण (Characterstics of veerya)

" वीर्य तू क्रियते येन या क्रिया ।

. नावीर्य कुरूते किन्चित् सर्वा वीर्यकृता क्रिया " ।।

. (च.सू–26/65)

. अर्थात् जो क्रिया जिसके द्वारा सम्पादित हो उसे वीर्य कहते है। बिना वीर्य के द्रव्य कुछ नहीं करता है, सभी क्रियाएँ वीर्य के द्वारा की जाती है।

- Veerya controls all types of drug action, hence veerya is chracterized by drug action.

- According to Acharya Vagbhatta veerya as potent quality in dravya and ordinary qualities are not considered as veerya.

स्वरूप (Nature of veerya)

" येन कुर्वन्ति तद्वीर्यम् "। (च.सू–26/13)

. अर्थात् जिसके द्वारा द्रव्य क्रिया सम्पादित हो ।

- **V**eerya is the factor that perform pharmacological action.
- Veerya is the active principal of dravya.
- Veerya can be seen by :-

- Samagra gunasarata :– The most potent 8 qualities are the essence of all gunas.
- Shaktyutkarsh :– The quality that provide strength to rasaadi gunas.
- Bahulata :– It is present in abundant as compared to other.

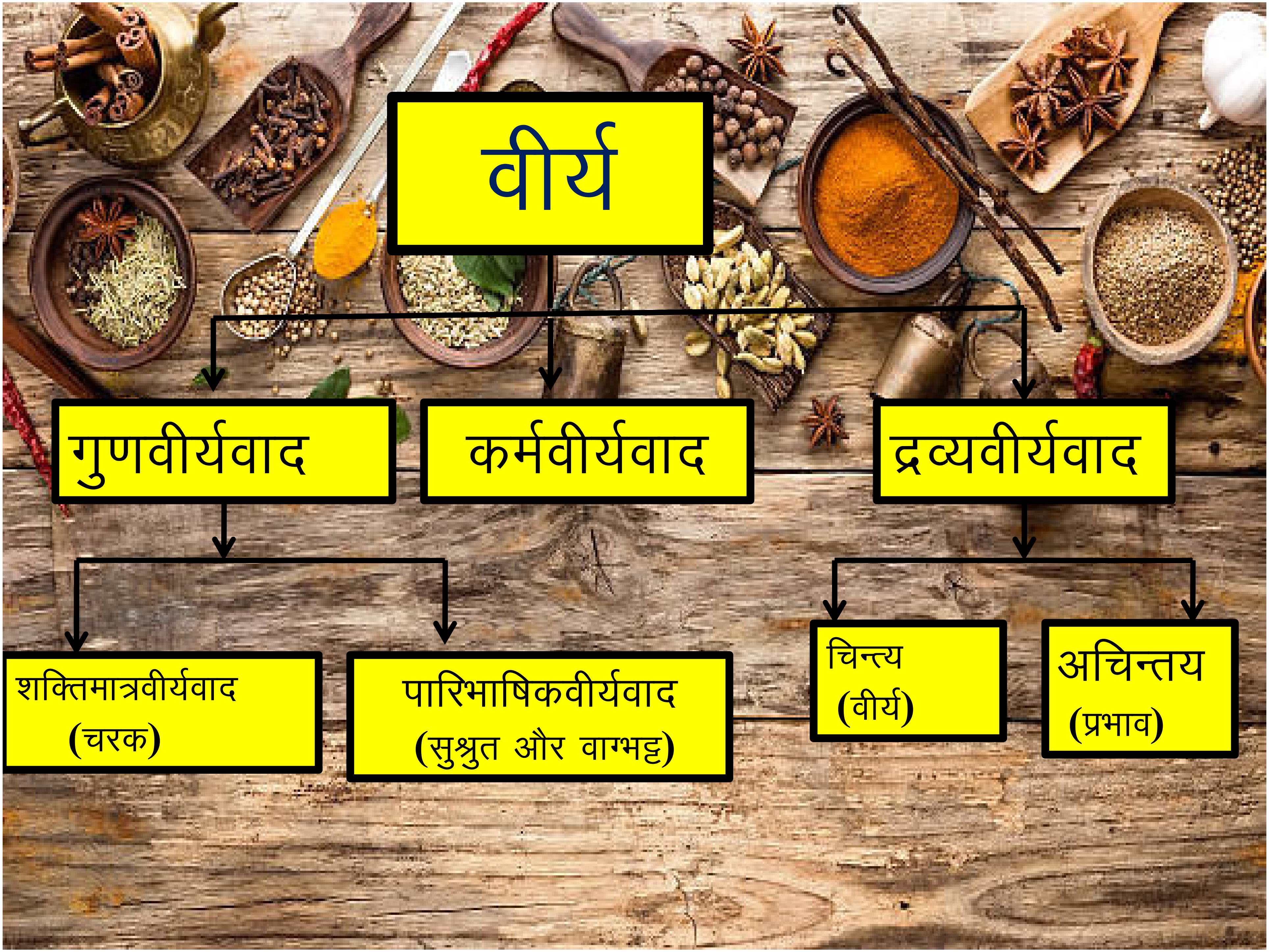
वीर्य
गुणवीर्यवाद
कर्मवीर्यवाद
द्रव्यवीर्यवाद
शक्तिमात्रवीर्यवाद (चरक)
पारिभाषिकवीर्यवाद (सुश्रुत और वाग्भट्ट)
चिन्त्य (वीर्य)
अचिन्तय (प्रभाव)

Shaktiveerya vada (शक्तिमात्रावीर्यवाद):-

नावीर्यं कुरूते किन्चित सर्वा वीर्यकृता क्रिया।

(च.सू0 26/65)

- It is also called as "Bahuvirya vada" as it is believed that drug action is out come of shakti of dravya .
- And Acharya CHARAK called veerya as shakti ,he believes that composition of drug will have therapeutic effect by shakti of drug.

Paribhasikviryavad (परिभाषिकवीर्यवाद):-

गुर्वादीनां वीर्यसंज्ञाविशिष्टाम्नायविहिद्वितापि लौकिकीति

समुद्भात्यते। (अं.सं.सू. 17/19)

- According to acharya Sushruta and acharya Vagbhatta , the most potent quality among gurvadi-guna will act as veerya .

Number of Veerya (वीर्य की संख्या) :-

वीर्य की संख्या के सम्बन्ध में मुख्यत: चार मत

- द्विविधवीर्यवाद
- अष्टविध वीर्यवाद
- पंचदशविधवीर्यवाद
- बहुविध वीर्यवाद

(1) द्विविधवीर्यवाद :– महर्षि चरक, सुश्रुत और वाग्भट्ट का कथन है कि कुछ आचार्यो उष्ण और शीत दो प्रकार के वीर्य मानते है।

Dwividhavirya vada (द्विविधवीर्यवाद):-

उच्च वीर्यं द्विविधमुष्णं शीतं च,

अग्नीषोमीयत्वाज्जगतः। (सु.सू.4)

- **This theory forward on panchamahabuta property .Whole world composed of panchamahabhuta which has agni-somiya essece, hence veerya are also in two number .i.e.,Ushna (agni) and Sheeta (Somiya).**

(2) अष्टविधवीर्यवाद:—महिर्षि चरक,सुश्रुत, वृद्ध वाग्भट्ट ने स्वरचित संहिताओं में वीर्य की संख्या के संदर्भ में अपना मत बताकर कहा है कि कुछ आचार्य वीर्य आठ प्रकार का मानते है।

(i) गुरू

(ii) लघु

(iii) शीत

(iv)उष्ण

(v)स्निग्ध

(vi)रूक्ष

(vii) तीक्षण

(viii)मृदु

Ashtavidhavirya (अष्टविधवीर्यवाद):-

मृदुतीक्ष्णगुरू लघुस्निगधरूषोष्ण शीतलम्

वीर्यमष्टविधं केचित् केचिद् द्विविधमास्थिताः।

शीतोष्णामिति।।(च.सू0 36/64)

- According to acharya Charaka guru ,sheeta,ushna,snigdha,rooksha, mridhu,tikshna,are the most powerful qualities hence they are term as veerya.
- In this view shusruta has stated pichchila and vishada as veerya instead of guru and laghu.

(3) पंचदशविध वीर्यवाद – आचार्य नागार्जुन ने वीर्य को कर्म लक्षण रूप मानते है लेकिन उन्होने पन्द्रह उत्कृष्ट कर्मो को ही वीर्य संज्ञा दी है।

1 अधोभागहर 2. उर्ध्वभाग हर 3. उभयतो भागहर 4. सांग्राहिक 5. संशमन 6. दीपन 7. पाचन 8. दारण 9. रोपण 10. **शोथकर** 11. **शोथघ्न** 12. शीतीकरण 13. जीवनीय 14 **प्राणघ्न** 15 मादन

(4) <u>बहुविध वीर्यवाद</u>– **आचार्य** चरक और नागार्जुन बहुविधवीर्य वादी है उनके अनुसार वीर्य की संख्या निर्धारित नही है। द्रव्य के जिस पदार्थ (रसादि) से जैसा कार्य होता है उसमे वैसे ही वीर्य (शक्ति) कल्पना की जाती है। अतः वीर्य अनेक है।

.

Panchabhautikatwa of veerya:-

- **According to acharya Sushruta panchbhautik properties of veerya as follows:-**

Sr.No.	VEERYA	PANCHMAHABHUTA
1.	Tikshna and Ushna	Agni
2.	Guru and Sheeta	Jala
3.	Snigdhu	Jala
4.	Mridhu	Jala + Akasha
5.	Ruksha	Vayu
6.	Laghu	Agni + Akasha + Vayu

❖Function of veerya

Sr.No	VEERYA	EFFECTS ON DOSHA	EFFECT ON SROTAS
1	Ushna	Pitta vardhak, vata-kapha hara	Dipan, Pachan, Murchan, Swedan, Vaman, Virechan, Trishnajanan,
2	Sheeta	Vata-kapha-vardhak, pitta har	Prahladan, Vishyandan, Sthirikaran, Prasadan, Kledan, Jivaniya, Stambhan, Raktaprasadan, Balya .
3	Snighdha	Kapha-vardhak, vata har	Snehan, Brimhna, Tarpan, Vajikaran, Vayasthapan
4	Ruksha	Vata-vardhak, kapha-pitta har	Sangrahan, Pidhan, Virukshan
5	Guru	Kapha-vardhak, vata-har	Uplepana, Brimhana , Balya

Sr.No.	VEERYA	EFFECT OF DOSHA	EFFECT ON SROTAS
6	Laghu	Vata-vardhak, kapha hara	Lekhana, Langhana, Dhatukshya
7	Mridhu	Pitta hara	Raktaprasadan, Mansaprasadan
8	Trishna	Kapha-hara	Sangrahi, Aachusan, Avdharna, Stravan
9	Vishada	Kapha-hara	Rukshan, Ropan, Kledaachushan
10	Pischila	Kapha-vardhaka	Uplepan, Purana, Brihan,

वीर्य की उपलब्धि

'वीर्यं यावदधीवासान्निपाताच्चोपलभ्यते'।
(च.सू.-26/66)

कुछ द्रव्यों का वीर्य जिह्वा या त्वचा से सम्पर्क होते ही प्रत्यक्षत: प्रतीत होता है और कुछ द्रव्य की शरीर में उसकी उपस्थिति - अधीवास के कारण उत्पन्न कर्म द्वारा अनुमान से होती है । कई द्रव्यों के वीर्य का ज्ञान दोनों प्रकार से होता है ।

वीर्य की उपलब्धि के साधन

वीर्य की उपलब्धि के साधन

- **अनुमान द्वारा**
  - शरीर में अधीवास
  - (अनूप मांस –उष्ण)
- **प्रत्यक्ष द्वारा**
  - जिव्हा या त्वचा से निपात
  - (मारीच -उष्ण)
- **प्रत्यक्ष एवं अनुमान द्वारा**
  - निपात एवं आधीवास
  - (मारीच -उष्ण)

क्र. सं	उदाहरण	वीर्य	प्रमाण	क्रिया
1	सैंधव	शीत	अनुमान	अधीवास
2	अनूपमांस	उष्ण	अनुमान	अधीवास
3	राजिका	तीक्ष्ण	प्रत्यक्ष	सुघने पर
4	मारीच (कृष्ण)	तीक्ष्ण	प्रत्यक्ष	जिव्हानिपात
5	पिप्पली	तीक्ष्ण	प्रत्यक्ष	त्वचा एवं निपात
6	लंका	उष्ण	अनुमान + प्रत्यक्ष	अधीवास एवं निपात

वीर्य का निर्धारण

महर्षि चरक ने द्रव्य के रस-विपाक तथा वीर्य का परस्पर सम्बन्ध बताते हुए द्रव्य का वीर्य निर्धारण करने हेतु सामान्य सिद्धान्त स्थापित किया है –

शीतं वीर्येण यद् द्रव्यं मधुरं रसपाकयोः ।
तयोरम्लं यदुष्णं च यद् द्रव्यं कटुकं तयोः।।

(च०सू०– 26/45)

अर्थात जो द्रव्य रस एवं विपाक में मधुर होते हैं, उनका वीर्य प्रायः शीत होता है। जो द्रव्य रस एवं विपाक में अम्ल या कटु होते हैं, उनका वीर्य प्रायः उष्ण होता है।

क्र. सं.	वीर्य	रस	विपाक	द्रव्य
1.	शीत	मधुर , कषाय , तिक्त	मधुर , कटु	दुग्ध, सर्पि, शर्करा, निम्ब
2.	उष्ण	अम्ल , कटु , लवण	मधुर , अम्ल , कटु ,	वृच्छाम्ल, चित्रक, मरिच, पिप्पली

विरुद्ध वीर्य वाले द्रव्यों का निर्देश :-

मधुरं किंचिदुष्णं स्यात् कषायं तिक्तमेव च ।
यथा महत्पञ्जमूलं यथाऽब्जानूपमामिषम् ॥
(च०सू०- 26/48)

लवणं सैन्धवं नोष्णमम्लमामलकं तथा ।
अर्कागुरुगुडुचीनां तिक्तानामुष्णमुच्यते ॥ (च०सू०- 26/49)

- कुछ मधुर रस वाले द्रव्य वीर्य में उष्ण होते हैं। वस्तुतः उन्हें शीतवीर्य होना चाहिए पर शीत होते नहीं है, उदाहरण के लिए जैसे जलीय जीव और आनूप जीव के मांस ये दोनों रस में मधुर है पर इनका वीर्य उष्ण होता है इसीलिए ये रस में मधुर होते हुए भी पित्त को शान्त नहीं करते हैं, अपितु पित्त को बढ़ाते हैं। इसी प्रकार कुछ कषाय और तिक्त रस वाले द्रव्य वीर्य में उष्ण होते हैं, जैसे-

क्र. सं	द्रव्य	द्रव्य का रस	द्रव्य का विपाक	आपेछित वीर्य	वीर्योपलब्धि
1.	आनूपमांस	मधुर	मधुर	शीत	उष्ण
2.	आमलकी	अम्ल	अम्ल	उष्ण	नोष्ण
3.	सैन्धव	लवण	मधुर	उष्ण	नोष्ण
4.	बृहत् – पचमूल	कषाय, तिक्त	कटु	शीत	उष्ण
5.	अर्क	तिक्त	कटु	शीत	उष्ण

वीर्य का प्राधान्य

द्रव्यगत पदार्थों में वीर्य सर्वप्रधान है क्योंकि औषध द्रव्यों के विभिन्न कर्म के कारण होते है। इसके अतिरिक्त यह अपने बल और गुण के उत्कर्ष के रस आदि को अभिभूत कर अपने कर्म का सम्पादन करता है। यथा -

क्र. सं	द्रव्य	रस	कर्म	वीर्य
1.	बृहत् पंचमूल	कषाय तिक्त	वातहर	उष्ण
2.	पलाण्डु	कटु	वातहर	स्निग्ध
3.	इक्षुरस	मधुर	वातकर	शीत

क्र. सं	द्रव्य	रस	कर्म	वीर्य
4.	कुलत्थ	कषाय	वातसंशमन	उष्ण
5.	पिप्पली	कटु	पित्तशामक	मृदु शीत
6.	आमलकी	अम्ल	पित्तशामक	शीत
7.	सैन्धव लवण	लवण	पित्तशामक	शीत
8.	काकमाची	तिक्त	पित्तवृद्धि	उष्ण
9.	मधु	मधुर	कफशामक	मधुर

नागार्जुन ने वीर्य की प्रधानता में निम्नाङ्किकित युक्तियाँ दी है–

वीर्यप्राधान्याद् द्रव्याणाम्।

1. **वीर्यवान् द्रव्यों का प्राधान्य**–चिकित्सा में वीर्यवान् द्रव्यों का ही प्रयोग किया जाता है, निर्वीर्य का नहीं।

2. **कर्मनिष्पत्ति**- वीर्य के द्वारा ही औषधों का कर्म होता है।

3. **रसाभिभव**-रसादि को अभिभूत कर यह कर्म-सम्पादन में समर्थ होता है अत एव तुल्यरस-गुणयुक्त द्रव्यों में इसके कारण कर्म में वैशिष्ट्य दृष्टिगोचर होता है।

Thank
You